बाइबल टीचर

वर्ष 20 | अगस्त 2023 | अंक 9

सम्पादकीय

चर्च ऑफ क्राईस्ट की आराधना

मसीह की कलीसिया को मसीह ने बनाया और मसीह की शिक्षा अनुसार इसके सारे कार्य होते है। प्रेरित पौलुस और अन्य प्रेरितों ने इसके विषय में बहुत कुछ सिखाया था। पौलुस ने कोरिन्थ में भाईयों को लिखा था, ''कि जब तक प्रभु न आये, समय से पहिले, किसी बात का न्याय न करो वही तो अन्धकार की बातें ज्योति में दिखाएगा, और मनों की मतियों को प्रगट करेगा, तब परमेश्वर की ओर से हर एक की प्रशंसा होगी।'' (कुरि. 4:5)। जो लोग सच्चाई से परमेश्वर के साथ जुड़े हुए हैं परमेश्वर उनकी आराधना को स्वीकार करेगा। यूहन्ना कहता है कि ''परमेश्वर आत्मा है और अवश्य दे कि उसके भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें'' (यूहन्ना 4:24)। जब हम आराधना करते हैं तो परमेश्वर हमारे बीच में होता है। जब हम आरा करने जाते हैं तो हमें साफ मन से उसकी उपासना करनी चाहिए क्योंकि हमारी उपासना करनी चाहिए क्योंकि हमारी उपासना कोई दिखावा नही है बल्कि सच्चे मन-अपने शरीरों द्वारा सच्चा बलिदान है। (रोमियों 1:1-2)

कई मसीही लोग आराधना को बड़े हल्के ढंग से लेते हैं। वे शायद यह सोचते हैं कि कभी बाभार चले जाओ तो अच्छा है, परन्तु परमेश्वर यह चाहता है कि हम यानि मसीही लोग आपस में मिलना जलना अर्थात् आराधना में जाना न छोड़ें (इब्रा. 10:25) मनुष्य के मन में इस तरह की भावना होती है कि वह महान् ईश्वर की उपासना करे। बहुत पहले से जब आदम हव्वा ने बच्चों को जन्म दिया था वे भी उपासना करना चाहते थे। इन दोनों भाईयों ने आराधना की थी परन्तु दोनों की आराधना परमेश्वर ने स्वीकार नही की थी। कैन की उपासना को उसने अस्वीकार कर दिया था। (उत्पत्ति 4:1-7)।

कलीसिया की स्थापना 33 ई. सन में हुई थी। कलीसिया की शुरू आत के बाद मसीही लोगों ने प्रत्येक रविवार के दिन आराधना शुरू कर दी और बाईबल हमें बताती है कि ये लोग, ''प्रेरिता से शिक्षा पाने और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलिन रहें। (प्रेरितों 2:42)। पद 47 में लिखा है और वे परमेश्वर की स्तुति

करते थे, और सब लोग उनसे प्रसन्न थे: और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उन से मिला देता था। जब अपनी आराधनो करते हैं तो वह बड़े ही अनुसाशन और सभ्यता अनुसार होनी चाहिए। (कुरि. 14:40)। यह मसीही लोग निरन्तर इन बातों में लगे रहते थे। आराधना का दिन उनके लिये विशेष दिन होता था। वे पूरा प्रयत्न करते थे कि इस दिन हम कहीं नहीं जायेंगे और आराधना को मिस नही करेंगे। आज ऐसा देखा जाता है कि मसीही लोग छोटी-छोटी बातों में इतने व्यवस्थ हो जाते हैं कि वे आराधना में नहीं जाते और यहां तक कि पिकनिक मनाने चले जाते हैं।

आईये ये देखें कि नये नियम अनुसार आराधना बाइबल अनुसार कैसे होती थी। उनकी आराधना पूर्ण रूप से बाइबल पर आधारित थी। उनकी कोई चर्च कमेटी नहीं होती थी जो उनकी बताये कि आराधना कैसे करनी है। आज लोगों ने अपनी पुस्तकें तथा नियम, बना रखें हैं। जिसमें लिखा रहता है कि आपको कब खड़े होना है, कब बैठना है तथा झगुवे के पीछे पीछे क्या-क्या बोलना है। यह सब मनुष्यों की शिक्षायें है। यीशु ने एक बार कहा था, ''कि ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं। उसने कहा था कि यह छोटी से तो मेरा आदर करते है पर उनका मन प्रभु से दूर रहता है, और यह भी कहा कि यह लोग मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं। (मत्ती 15:8, 9)। लैव्यवस्था की पुस्तक उसके 10:1-3 में हम दो भाइयों के विषय में पढ़ते है। जिन्होंने परमेश्वर को अपनी आराधना से प्रसन्न नहीं किया।

मसीह की कलीसिया के लोग प्रत्येक सन्डे जोकि सप्ताह का पहिला दिन है, आराधना के लिये इक्कट्टे होते है, और हम यह देखना चाहते कि मसीही लोग पहली शताब्दी में किस प्रकार से आराधना करते थे। सबसे पहले हम यह देखते हैं कि वहां कोई स्पेशल पास्टर या प्रीस्ट रंग-बिरंगे चोगे पहिनकर अगुवाई नहीं करता था, बल्कि कलीसिया के योग्य पुरूष मिलकर उपासना में अगुवाई करते थे। मसीह की कलीसियों में कोई भी पास्टर सिक्टम नही होता था। इस आराधना में केवल बाइबल को अगुवाई के लिये इस्तेमाल किया जाता था। उन लोगों ने मनुष्यों की शिक्षाओं पर आधारित कोई कायदे नियम नहीं बनाये थे। यह आराधना बड़ी ही साधारण होती थी। सारी आराधना नये नियम पर अधारित थी। सारी आराधना परमेश्वर के बताये गये नमूने के अनुसार थी। इस आराधना में किसी प्रकार का शौर, कूदना, चिल्लाना वा बाजे और ढोलक ने ही होते थे। पुराने नियम में बाज़ों का वर्णन हुआ है, क्योंकि आज, हम यीशु के नये नियम में रहते हैं इसलिये हम बाज़े इस्तेमाल नहीं करते। बाज़ों के साथ नहीं बल्कि गले से प्रशंसा करते है।

आज हम अपनी आराधना में प्रार्थना करते हैं। प्रार्थना में हम परमेश्वर को प्रत्येक आशिष के लिये धन्यवाद देते हैं। हम प्रार्थना के द्वारा अपने पिता परमेश्वर से बातचीत करते हैं। प्रार्थना यीशु के नाम में की जाती है (यूहन्ना 16:23; कुलु. 3:17)। प्रेरित लोग हमेशा प्रार्थना करते थे। वे प्रार्थना के महत्व को समझते थे। (प्रेरितों 12:5; रोमियों 8:26; थिस्स. 5:17)। अलग-अलग समय पर भाई लोग प्रार्थना में अगवाई करते हैं। हम सब प्रार्थना में भाग लेते हैं। सब प्रार्थना के समय चुपचाप भाग लेते हैं तथा बीच में कोई भी

सदस्य बोलता नहीं है और प्रार्थना, के बाद सब लोग आमिन बोलते हैं। कई स्थानों पर लोग प्रार्थना के समय बोलते है ''ओ जीजस, हे मेरे परमेश्वर हल्लैलयाह प्रेज-प्रेज यह बातें बाईबल अनुसार नहीं है और सारे संसार में जहां भी मसीह की कलिसियाएं हैं वे इस प्रकार से प्रार्थना नहीं करतीं। हम यीशु के नाम में इसलिये प्रार्थना करते है क्योंकि वह हमारा महायस्थ है। (1 तीयु 2:5, 1 यूहन्ना 2:1-2)।

फिर हम अपनी आराधना में आत्मिक गीत और भजन गाते हैं। हम किसी भी प्रकार के बाजे-ढोलक इत्यादि नहीं बजाते क्योंकि बाइबल सिखाती है कि ''आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, अपने मन में प्रभु के साम्हने गाते और कीर्तन करते रहो।'' (इफि. 5:19)। नये नियम में कहीं भी हम यह नहीं पढ़ते कि भजनों के साथ बाज़ों को भी इस्तेमाल किया जाता था। सारी बातें सभ्यता अनुसार तथा क्रमानुसार होती हैं। (1 कुरि. 14:40)। चर्च ऑफ क्राईस्ट में सारे लोग एक साथ मिलकर गाते हैं। सारी कलीसिया मिलकर परमेश्वर की स्तुति करती है।

फिर हम आराधना में बाइबल से सिखाते है। एक व्यक्ति अपना सरमन तैयार करके लाता है और कलीसिया के सामने प्रचार करता है। प्रत्येक सदस्य को यह सिखाया जाता है कि वह अपने आपको दूसरों को सिखाने के योग्य बनायें जैसा कि 2 तीम. 2:15 में लिखा है कि ''अपने आपको परमेश्वर का ग्रहण योग्य और ऐसा काम करने वाले ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए और जो सत्य के वचन को (बाइबल) को ठीक रीति से कमा में लाता हो। लोगों को शिक्षा दी जाती हैं कि वे अपने आपको वचन के लिये तैयार करें।'' (2 तीमु. 4:1-4)। स्त्रियां मसीह की कलीसिया में जहां पुरूष भी बैठे हैं वहां प्रचार नहीं करती (1 कुरि. 14:34, 1 तीमु. 2:1-12)। स्त्रियां बच्चों को और स्त्रियों को सिखा सकती हैं।

मसीह की कलीसिया प्रत्येक रविवार को प्रभु भेज लेती है। यह भोज प्रभु यीशु की मृत्यु की याद-गारी में लिया जाता आज कई लोगों ने इस भोज, को भी बड़ा हल्का कर दिया है। इसे एक रीति रिवाज़ सा बनाकर रख दिया है। प्रीस्ट लोग इसके ठेकेदार बन गये है, कई बार वो लोग खुद यह फैंसला कर लेते हैं कि किसको प्रभु, भोज देना है और किसको नही देना है प्रभु भोज किसी प्रकार का प्रसाद नही है, मत्ती के 26 अध्याय में हम पढ़ते हैं कि यीशु ने प्रभु भोज की स्थापना कीं थी। अपनी मृत्यु से पहिले वह अपने चेलों के साथ यह भोज करना चाहता था। अब 26 आयत से हम देखते हैं लिखा है कि यीशु ने रोटी ली क्योंकि पसाह के पर्ब्ब में अखमीरी रोटी इस्तेमाल होती थी, इसलिये यह ऐसी रोटी थी जो साधारण बिना खमीर के बनाई गई थी, अब हम बाइबल में कहीं भी यह नहीं पढ़ते कि इस रोटी में मक्खन, डालडा या देसी घी नमक या चीनी मिलाया गया था, यह बिलकुल ऐसी रोटी थी जैसी हम अपने घर में रोज बनाते हैं लिखा है यीशु ने रोटी ली, और धन्यवाद किया, और उन्हें देकर कहा, अपने चेलों को लो खाओ, यह मेरी देह हैं। फिर उसने कटोरा लेकर, धन्यवाद किया और उन्हें देकर कहा, तुम सब इसमें से पीओ। क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लोह हे, जो बहुतों के लिये पापों की क्षमा के निमित बहाया जाता है। अब इस कटोरे में क्या था? क्या उसमें सन्तरे का

रस, अनार का रस, पेप्सी कोला था? यीशु ने कहा दाख का रस यह उस दिन तक कमी न पिऊंगा जब तक तुम्हारे साथ अपने पिता के राज्य में नया न पिऊँ (29 पद)। इस कटोरे में दाख यानि अंगूर का रस था। आज जब हम यीशु के लोहू को याद करते हैं तो हम अंगूर के रस का इस्तेमाल करते है। कई लोग एक गलत शिक्षा देते हैं कि रोटी और अंगूर का रस सच में असली लोहू और मास बन जाते हैं। बाइबल बताती है कि चेले या मसीही लो सप्ताह के पहिले दिन रोटी तोड़ने या प्रभु प्रभु भोज के लिये एकत्रित हुए। जो प्रभु भोज की टेबल पर आकर अगुबाई करते है उन्हें बड़ी तैयारी के साथ आना चाहिए। आप प्रभु भोज के बारे में। कुरि. 11:23-29 में पढ़ सकते है कि हमें उसमें कैसे मांग लेना चाहिए। प्रभु को हम बड़े आदर के साथ लेते है, क्योंकि यह उसकी मृत्यु और बलिदान को हमें याद दिलाता है।

मसीह की कलीसिया में हमारा आराधना के समय चन्दा भी इकट्ठा करते हैं, क्योंकि कलीसिया के कार्य को करने के लिये धन की आवश्यकता होती है। यह चन्दा सुसमाचार के प्रचार करने में तथा कभी कोई गरीब मसीही भाई की सहायता करने में काम आता है। बाइबल बताती है। सप्ताह के पहिले दिन यानि रविवार को हमें अपनी आमदनी के अनुसार चन्दो देना है। क्या हम मन से चन्दा अपनी कमाई अनुसार देते है या फिर सामने चन्टे की थैली आने पर जेब से 10 बीस रूपये डाल देते हैं। कई बार हम सोचते है कि साथ वाला डाल रहा है तो मैं भी कुछ डाल देता हूं। प्रिय भाईयो मसीही लोग कलीमिया में चन्दा देते है तो दिल खोलकर देते है क्योंकि बाइबल हमें सिखाती है कि जो थोड़ा बोता है वह थोड़ा काटेगा भी; और जो बहुत बोता है वह बहुत काटेगा भी। हर एक जन जैसा मान में ठाने वैसा ही दान करे न कुढ-कुढ के और न दबाव से क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देने वाले से प्रेम रखता है। (कुरि. 9:6-7)। यदि आपके पास नौकरी नहीं है या कमाई का कोई साधन नही है वो कोई बात नहीं हे पर जानता है, परन्तु कई लोग 20 से 50 हजार तक कमाते है और चन्दा 20 रूपये या पचास रूपये डालते यदि हम इस प्रकार का व्यवहार रखेंगे तो कलीसिया का बजट खराब हो जायेगा। यकिदूनिया में एक गरीब कली के विषय में हम पढ़ते हैं कि वे अपने कंगालपन में भी बड़ी उदारता दिखाते थे। पौलुस कहता है, ''अब हे भाईयो हम तुम्हें परमेश्वर के उस अनुग्रह का समाचार देते हैं जो यकिदूनिया की कलीसियाओं पर हुआ है कि क्लेश की बड़ी परीक्षा में उनके बड़े आनन्द और भारी कंगालपन के बढ़ जाने से उनकी उदारता बहुत बढ़ गई। उसके बाद वह कहता है, इसलिये अब यह काम नाम पूरा करो, कि जैसा इच्छा करने में तुम तैयार थे, वैसा ही अपनी अपनी पूंजी के अनुसार पूरा भी करो। क्योंकि यदि मन की तैयारी हो तो दान उसके अनुसार ग्रहण भी होता है जो उसके पास है न कि उसके अनुसार जो उसके पास है। इस बात को याद रखिये कि नये नियम की उपासना में कहीं भी दसवें अंश के बारे में कही नहीं सिखाया गया है पुराने नियम में दसवां अंश देते थे, परन्तु यह केवल पैसा ही नहीं बल्कि फसल इत्यादि कुछ भी हो सकता है। आपको जैसे परमेश्वर ने आशिषित किया है वैसे अपने चन्दे को दे। कई लोग सदस्यों को डराते हैं और यह कहते हैं कि यदि दसवॉ अंश नहीं दोगे तो प्रभु अप्रसन्न हो जायेगा या आपको

आशिष नहीं देगा। हमेशा याद रखें (कुरि. 9:7)। कई पास्टर चर्च की फीस मांगते है मैम्बरशिप फीस यह सब बातों को लागु करके लोगों ने एक कमाई का साधन बना लिया है।

बाइबल बताती है कि पहली शताब्दी में मसीही लोग प्रेरितों से खरी शिक्षा पाते थे तथा कभी भी आराधना मिस्स नहीं करते थे जैसे कि इब्रानियो का लेखक इब्रानियों 10:25-26 में कहता है।

आत्मा का कोढ़

सनी डेविड

कुछ बातें ऐसी हैं, जो हम में से हर एक को अच्छी लगती हैं और उनके प्रति हमारा व्यवहार एक समान है। जैसे कि, हम सब शारीरिक रूप से स्वस्थ रहना चाहते हैं। हम में से कोई भी बीमार पड़ने की अभिलाषा नहीं करता। परन्तु बीमारी फिर भी एक ऐसी वस्तु है जो एक दिन बिन बुलाए मेहमान की नाई अकसर हमारे पास आ धमकती है। फिर भी यदि बात खांसी , जुकाम और बुखार तक ही सीमित हो तो हमें कोई ज्यादा चिन्ता नहीं होती। लेकिन कुछ बीमारियां ऐसी हैं जिन से हम सब सचमुच में डरते हैं। ऐसी ही एक बीमारी कोढ़ है। प्राय: हम एक कोढ़ी के पास जाते हुए घबराते हैं, क्योंकि यह एक घिनौनी बीमारी है। लगभग सभी देशों में कोढ़ियों के लिए रहने का अलग स्थान होता है। क्योंकि जिस मनुष्य को यह रोग होता है उसे अशुद्ध समझा जाता है। किन्तु न केवल घिनोने-पन के कारण परन्तु क्योंकि यह रोग लगनेवाला रोग माना जाता हैं इस कारण और भी लोग एक कोढ़ी के पास रहने से बचते हैं। कोढ़ का रोग सचमुच में बड़ा भयानक है, क्योंकि यह धीरे-धीरे बढ़ता और फैलता चला जाता है। और जहां-जहां शरीर में यह पहुंचता है वहीं पर यह शरीर को हानि पहुंचाता है और मनुष्य की देह को नाश करता है। परन्तु मित्रो, जगत में कोई भी ऐसा रोग नहीं है जो मनुष्य की आत्मा को हानि पहुंचा पाएं अर्थात मनुष्य बड़े से बड़े रोग का शिकार बन सकता है, और चाहे वह रोग उसकी मृत्यु का कारण भी क्यों न बन जाए। परन्तु यदि वह मनुष्य प्रभु यीशु मसीह में है तो वह सुरक्षित है। क्योंकि यीशु उस मनुष्य के पापों के बदले में अपने आपको बलिदान करके उसके पापों का प्रायश्चित कर चुका है। अर्थात, यह सम्भव है, कि कोई मनुष्य शारीरिक रूप से रोगी हो परन्तु आत्मिक रूप से जीवित हो। और उसी प्रकार यह भी सम्भव है, कि कोई मनुष्य शारीरिक रूप से तो स्वस्थ हो, परन्तु आत्मिक रूप से मरा हुआ हो। एक जगह प्रभु यीशु ने एक बार कहा था, कि, ''यदि तेरा हाथ तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काट डाल टुन्डा होकर जीवन में प्रवेश करना, तेरे लिए इस से भला है, कि तू दो हाथ रखते हुए नरक के बीच उस आग में डाला जाए जो कभी बुझने की नहीं। और यदि तेरा पांव तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काट डाल। लंगड़ा होकर

जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है, कि दो पांव रहते हुए नरक में डाला जाए। और यदि तेरी आंख तुझे ठोकर खिलाए तो उसे निकाल डाल, काना होकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना तेरे लिए इस से भला है, कि दो आंख रहते हुए तू नरक में डाला जाए।'' (मरकुस 9:43-47)। अर्थात, मनुष्य टुन्डा, लंगड़ा और काना होकर भी स्वर्ग के राज्य में प्रवेश कर सकता है, और प्रभु ने कहा, कि यह इस से कहीं अधिक भला है, कि कोई मनुष्य सारे अंग रखते हुए और स्वस्थ होते हुए भी नरक की आग में डाला जाए।

मित्रो, देह का कोढ़ यद्यपि बड़ा ही भयानक है, परन्तु आत्मा का कोढ़ और भी अधिक भयानक है। और पाप वास्तव में एक कोढ़ के समान है। क्योंकि पाप मनुष्य को अशुद्ध करता है; और कोढ़ की तरह यह धीरे-धीरे फैलता है। कोढ़ की ही तरह यह एक लगनेवाली बीमारी है, और जबकि देह का कोढ़ तो मनुष्य के शरीर को ही नाश करता है, परन्तु पाप मनुष्य की आत्मा को भी नाश करता है। लेकिन सबसे बड़ी भयानक और चिन्ताजनक बात यह है, कि जबकि देह के कोढ़ से तो संसार में बहुत ही थोड़े से लोग पीड़ित हैं, परन्तु आत्मा के कोढ़ अर्थात पाप से सारा तगत पीड़ित है। यद्यपि इस रोग में कमी और अधिकाई अवश्य हो सकती है, अर्थात किसी को कम हो सकता है और किसी को अधिक, परन्तु सच्चाई यह है कि मनुष्यों में एक भी ऐसा इन्सान नहीं है जो पाप से रहित है। क्योंकि मनुष्य के मन को केवल परमेश्वर ही जानता हैं, इसलिये मनुष्य की आत्मिक हालत को केवल वही ठीक से बता सकता है। केवल एक डॉक्टर ही रोग को पहिचान कर बता सकता है। और अपने वचन की पुस्तक बाइबल में परमेश्वर मनुष्यों को सम्बोधित करके कहता है, कि वे सब के सब पाप के वश में हैं, कि वे सब के सब पाप के वश में हैं, और कोई भी धर्मी नहीं है। इसलिए कि सब ने पाप किया है और सब परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। (रोमियों 3:9, 10, 23)। अक्सर हम पाप को झूठ, चोरी और हत्या जैसे कामों तक ही सीमित रखते हैं। परन्तु परमेश्वर का वचन कहता है कि यदि मनुष्य किसी प्रकार का कोई कुविचार भी मन में लाता है, तो वह भी पाप है, क्योंकि पाप का सम्बन्ध वास्तव में मनुष्य के मन से है। (मत्ती 5:21-30)। परन्तु फिर हम यह भी देखते हैं, कि परमेश्वर की पुस्तक बाइबल में लिखा है कि उसकी आज्ञाओं को तोड़ना या उसकी आज्ञा पर न चलना भी पाप है। (1 यूहन्ना 3:4; यूहन्ना 12:48)। जबकि यह सच है, तो इसमें कोई संदेह नहीं, कि मनुष्यों में कोई भी धर्मी नहीं है और सबने पाप किया है। क्योंकि कौन सा ऐसा मनुष्य है, जिसके मन में कभी कोई कुविचार न आया हो? या कौन सा ऐसा मनुष्य है, जिसने कभी परमेश्वर की किसी आज्ञा को न तोड़ा हो, या उसके वचन में लिखी हर एक आज्ञा का पालन किया हो?

क्योंकि पाप मनुष्य को अपवित्र करता है, इसलिए परमेश्वर और मनुष्य का कोई सम्बन्ध नहीं है। क्योंकि परमेश्वर पवित्र है। इसी कारण परमेश्वर के वचन की पुस्तक में एक जगह हम पढ़ते हैं, कि मनुष्य को उसके अपने ही अधर्म के कामों ने परमेश्वर से अलग कर दिया है। (यशायाह 59:1, 2)। उद्धार प्राप्त करने का अर्थ है, पापों से छुटकारा प्राप्त करके परमेश्वर के पास आना। परन्तु जब तक मनुष्य पाप के भीतर हैं या मनुष्य के भीतर पाप है तब तक मनुष्य और परमेश्वर का मेल नहीं हो सकता। क्योंकि

पाप के कारण मनुष्य अपवित्र है, परन्तु परमेश्वर पवित्र हैं।

पाप एक प्रकार का दासत्व है। एक बार प्रभु यीशु ने कहा था, ''कि जो कोई पाप करता है वह पाप का दास है।'' (यूहन्ना 8:34) परन्तु मनुष्य पाप का दास कुछ ही क्षणों में नहीं बन जाता, इसमें समय लगता है। जिस प्रकार भैंस पानी में नहाने के लिए धीरे-धीरे तालाब के भीतर जाती है, ठीक ऐसे ही प्रत्येक मनुष्य पाप का दास बनता है। कोई भी बुरी आदत या बुरी संगति या किसी भी प्रकार का कोई पाप हो उसका आरम्भ एक से छोटे रूप में या थोड़ी सी मात्रा में होता है। लेकिन समय के साथ-साथ वह बढ़ता और फैलता जाता है। और फिर मनुष्य उसका शिकार बन जाता है। पवित्र बाइबल का लेखक इसी बात को एक जगह बड़े ही सुन्दर शब्दों में लिखकर इस प्रकार कहता है, 'परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा से खिंचकर और फंसकर परीक्षा में हड़ता है। और अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जानती है, और पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यु की उत्पन्न करता है।'' (याकूब 1:14, 15)।

पाप का स्वभाव खमीर के समान है। पवित्र बाइबल में हमें यह चेतावनी मिलती है, ''क्या तुम नहीं जानते, कि थोड़ा सा खमीर पूरे गूँधे हुए आटे को खमीर कर देता है?'' इसलिए, ''धोखा न खाना'' क्योंकि ''बुरी संगति अच्छे चरित्र को बिगाड़ देती है।'' (1 कुरिन्थियों 5:6; 15:33)। मनुष्य जो कुछ भी करता है उसे वह किसी अन्य मनुष्य के द्वारा ही सीखकर करता है। यदि किसी मनुष्य की संगति बुरी है तो उसका चरित्र भी बुरा ही होगा। इसलिये पाप एक लगनेवाला रोग है।

पाप का परिणाम मृत्यु है। जिस प्रकार शारीरिक मृत्यु आत्मा की देह से अलग करती है। उसी प्रकार पाप के कारण क्योंकि मनुष्य परमेश्वर से अलग है, इसलिए वह आत्मिक रूप से मरा हुआ है। परन्तु, परमेश्वर अपने वचन की पुस्तक के द्वारा हमें बताता है, कि जबकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है। (रोमियों 6:23)।

मित्रो, बाइबल परमेश्वर के वचन की पुस्तक है, और इस पुस्तक में हमें यह खुश-खबरी मिलती है, कि, ''परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।'' (यूहन्ना 3:16)। पाप मनुष्य को नाश करता है, अर्थात वह मनुष्य को परमेश्वर से अलग रखकर उसे नरक में ले जाता है। परन्तु परमेश्वर पाप से घृणा रखते हुए भी मनुष्य से प्रेम रखता है और उसे बचाना चाहता है। यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है। क्योंकि परमेश्वर ने अपने वचन को मनुष्य के रूप में देहधारी बनाकर पृथ्वी पर भेज दिया। उसी यीशु को परमेश्वर ने अपने होनहार के ज्ञान से, जगत के पापों का प्रायश्चित करने के लिए, एक क्रूस पर मृत्यु का दन्ड दिलवाया। इसीलिए बाइबल में लिखा है, कि यीशु में परमेश्वर की ओर से हमें अनन्त जीवन का बरदान मिलता है। क्योंकि परमेश्वर की योजना अनुसार, जब कोई भी मनुष्य उसके पुत्र यीशु में यह विश्वास लाता है कि यीशु मेरे पापों के बदले में क्रूस के ऊपर मरा, और पाप से अपना मन फिराकर, अपने सब पापों की क्षमा के लिए जल के भीतर बपतिस्मा लेता है। तो परमेश्वर उस मनुष्य

के सब पापों को क्षमा करके उसे यीशु के कारण पाप रहित मान लेता है और उसके साथ अपना मेल कर लेता है। परन्तु जब तक मनुष्य अपने जीवन में पाप की उपस्थिति को अनुभव करके उसके परिणाम पर विचार नहीं करता, वह तब तक परमेश्वर के पास आने और उसके वचन को मानने की आवश्यकता को महसूस नहीं करता। क्योंकि डॉक्टर के पास वही मनुष्य जाता है जिसे अपनी देह की चिन्ता होती है। क्या आप को अपनी आत्मा को बचाने की चिन्ता है? सोचिए, कि परमेश्वर ने आपकी आत्मा को बचाने के लिये कितना बड़ा बलिदान दिया। इस पृथ्वी पर आप इससे बड़ा और कोई दूसरा काम नहीं कर सकते कि यीशु के द्वारा आप परमेश्वर के साथ अपना मेल कर लें।

सुनिए कि पवित्र बाइबल क्या कहती है, ''सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है-और सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिस ने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल-मिलाप कर लिया- अर्थात परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल-मिलाप कर लिया, और उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया- जो पाप से अज्ञात् था, उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।'' (2 कुरिन्थियों 5:17-21)।

कलीसिया का नाम

जे. सी. चोट

कलीसिया को बाइबल अनुसार होने के लिए अवश्य है कि उसका नाम बाइबल से हो। तथापि, संसार में मनुष्यों द्वारा बनाई हुई बहुतेरी कलीसियाएं है जो विभिन्न नामों से कहलाई जाती है। ऐसा क्यों है? इनमें से कुछ नाम इन कलीसियाओं के संस्थापकों को सम्मानित करने के लिये रखे गए, जैसे "लूथरन।" और कुछ नाम किसी शिक्षा या सिद्धांत जैसे बपतिस्मा अथवा प्रभु का कार्य करने की किसी विधि को ऊंचा करने के लिये रखे गए। कुछ ऐसे हैं जो किसी दिन को महिमान्वित करते हैं, जैसे पिन्तेकुस्त अथवा सब्त का दिन। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे भी हैं जो कलीसिया में अध्यक्षों (प्रेजबिटरों) के कार्य को महत्व देते है। किन्तु ये सब नाम, और ऐसे ही अन्य भी जिनका उल्लेख किया जा सकता है, उस महिमा, और, प्रशंसा और सम्मान को जो मसीह का है ले लेते हैं।

मनुष्यों द्वारा दिए गए नाम अनुचित है, इसके बहुत से कारण है। पहले, ये फूट डालते है। इनसे वहां भेद-भाव उत्पन्न होते हैं जो कि परमेश्वर नहीं चाहता। ये लोगों को अलग-अलग करते हैं। ये प्रभु यीशु की उस प्रार्थना का विरोध करते है जिसके विषय में यूहन्ना 17 वें अध्याय में हम पढ़ते हैं, उसने प्रार्थना की कि हम सब एक हों। दूसरे, पवित्रशास्त्र में इनकी निंदा की गई है। 1 कुरिन्थियों 1:10-13 में प्रेरित पौलुस ने मनुष्यों के नामों को धारण करने के अनुचित परिणाम के विषय में मसीही भाईयों को बताया,

यह पक्षपात और साम्प्रदायिकता को जन्म देते हे। तीसरे, मनुष्यों के नाम प्रभु के नाम का स्थानापन्न करते है। तौभी मसीह के नाम के विषय में हम पढ़ते हैं, "और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिस के द्वारा हम उद्धार पा सकें।" (प्रेरितों 4:12), चौथे, मनुष्यों के नाम भ्रम-पूर्ण व अधर्म-पूर्ण है, अविश्वासियों पर इनका अनुचित प्रभाव पड़ता है। यह अविश्वास को जन्म देते है। पांचवें, वे सब जो इन नामों को अपने ऊपर रखते हैं, और वे जो इन के लिये मसीह से फिर गए हैं, वे सब इन्हीं के कारण नाश होंगे। इसलिये, ये अनुचित और पापपूर्ण है।

कलीसिया के विषय में हम पढ़ते हैं, यीशु मसीह ने इसे बनाने की प्रतिज्ञा की थी (मत्ती 16:18)। पवित्रशास्त्र में हम पढ़ते हैं कि प्रभु यीशु ने कलीसिया को अपने लोहू से मोल लिया था (प्रेरितों 20:28), और वह इसका उद्धारकर्त्ता है (इफिसियों 5:23), व इसका सिर है (कुलुस्सियों 1:18)। इसलिये, यह स्वभाविक ही है कि अपने संस्थापक, बनाने वाले, और उद्धारकर्ता को सम्मानित करने के लिये उसका नाम यह अपने ऊपर रखे। ऐसे ही, जब पौलुस ने रोम में कलीसिया को लिखा, व जिस स्थान में वह था वहां की स्थानीय मंडलियों की ओर से अभिवादन भेजा, उसने कहा, "तुम को मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार।" (रोमियों 16:16)। फिर कुरिन्थुस में कलीसिया से उसने कहा, "इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो, और अलग-अलग उसके अंग हो।" (1 कुरिन्थियों 12:27)। किन्तु, जबकि देह कलीसिया है (इफिसियों 1:22, 23), इसलिये यह स्पष्ट है कि वह मसीह की कलीसिया के विषय में कह रहा था। इसे परमेश्वर की कलीसिया (1 कुरिन्थियों 1:2; प्रेरितों 20:28), परमेश्वर का राज्य (1 कुरिन्थियों 6:9), मसीह का राज्य (इफिसियों 5:5), उसके प्रिय पुत्र का राज्य (कुलुस्सियों 1:13), हमारे प्रभु का राज्य (2 पतरस 1:11), कलीसिया (प्रेरितों 13:1), जीवते परमेश्वर की कलीसिया (1 तीमुथियुस 3:15) पहिलौठे की कलीसिया (इब्रानियों 12:23) भी कहा गया है। तदनुसार, कलीसिया का वर्णन किसी और अन्य नाम या वाक्यांश से नहीं हुआ। इसी समय, यह भी ध्यान में रहे कि जो कुछ परमेश्वर का है वह मसीह का भी है। इसी प्रकार से, ये सब नाम उस कलीसिया की ओर संकेत करते हैं जिसे यीशु मसीह ने बनाया। यदि यह मसीह की कलीसिया नहीं, तब किस की हो सकती है? इसके अतिरिक्त, अन्य नाम व विभिन्न वाक्यांशों को धारण करके, ऐसा लगता है कि लोग जानबूझ कर परमेश्वर के वचन से दूर भागना चाहते है ताकि प्रभु की कलीसिया के लिये अपने मन पसंद का कोई अन्य नाम चुनें। परन्तु आईये, हम बाइबल की बात मानें और कलीसिया को उसी नाम से संबोधित करें जो बाइबल में मिलता है। तभी हम सही होंगे।

जहां तक कलीसिया के सदस्यों के नाम का प्रश्न है, पवित्रशास्त्र में इसे भी स्पष्टता से बताया गया है। सबसे पहले, यशायाह भविष्यद्वक्ता ने कहा कि परमेश्वर अपने लोगों को एक नया नाम देगा। (यशायाह 62:2)। कई वर्षों के बाद परमेश्वर ने पौलुस को चुना कि वह उस नाम को लोगों के सामने प्रगट करे (प्रेरितों 9:15)। परन्तु यह तब तक नहीं

दिया जाना था जब तक कि अन्य-जाति वालों को परमेश्वर की आज्ञा पालन करने का अवसर न मिले। और यह सब सूरिया के अन्ताकिया में पूरा हुआ जबकि चेले सबसे पहले वहां मसीही कहलाए। (प्रेरितों 11:26)। इसके बाद, हम पढ़ते हैं जबकि पौलुस राजा अग्रिप्पा को परमेश्वर का वचन सुना रहा था, तो उसने सुन कर उत्तर दिया, "तू थोड़े ही समझाने से मुझे मसीही बनाना चाहता है।" (प्रेरितों 26:28)। अत: हम पढ़ते हैं, पतरस ने कहा, "पर यदि मसीही होने के कारण दुख पाए, तो लज्जित न हो, पर इस बात के लिये परमेश्वर की महिमा करे।" (1 पतरस 4:16)। इसलिये, यह स्पष्ट हो जाता है कि आरंभ के दिनों के मसीह के अनुयायी मसीही, केवल मसीही थे। आज भी प्रभु चाहता है कि हम वही हो। यदि हम मसीही नाम के साथ किसी अन्य नाम या वाक्यांश को जोड़ते हैं, तब इसका अर्थ यह होता है कि हम वास्तव में मसीही नहीं है। मसीही एक ऐसा नाम है जो लोगों को शेष विश्व से अलग करता है व यह प्रभु की इच्छानुसार है।

कलीसिया व इसके सदस्य दोनों के नामों के द्वारा, यीशु मसीह के नाम की प्रशंसा व बढ़ाई होनी चाहिए। ऐसा क्यों? इसलिये, क्योंकि, यह पारिवारिक नाम है (इफिसियों 3:15), यह नाम सब नामों में श्रेष्ठ है (फिलिप्पियों 2:9-11), और इसी एक नाम में उद्धार है (प्रेरितों 4:12)। इसलिये, हमें मसीह के नाम में विश्वास करना है (1 यूहन्ना 5:13), उसके नाम को स्वीकार करना है (2 तीमुथियुस 2:19), मन फिराकर उसके नाम में बपतिस्मा लेना है (प्रेरितों 2:38), उसके नाम में आराधना करने के लिये एकत्रित होना (मत्ती 18 :20), व सब कुछ उसी के नाम में करना है (कुलुस्सियों 3:17) ताकि उसके नाम के द्वारा हमें अन्नत जीवन मिल सके (यूहन्ना 20: 30, 31)।

यह सब कुछ ध्यान में रखते हुए, नि:संदेह, कोई भी व्यक्ति यह नहीं कह सकता कि नाम का कुछ भी महत्व नहीं है या नाम में कुछ भी नहीं है। हां, यह सत्य है कि मनुष्यों के नामों व वाक्यांशों में उद्धार नहीं है, परन्तु वे जो इनको अपने ऊपर लेते व रखते हैं इन्हीं के कारण नाश होंगे। दूसरी ओर, उद्धार केवल मसीह के नाम में ही है।

परमेश्वर का दूत

बैटी बर्टन चोट

यदि हम पुराने नियम के निर्गमन 3 अध्याय को नए नियम के 1 कुरिन्थियों 10:1-4 तथा यूहन्ना 8:51-59 को एक साथ मिलाकर पढ़ें तो हमें यह समझने में सहायता मिलेगी कि पुराने नियम के समय में वचन का क्या स्थान था। निर्गमन 3:2 में हम एक व्यक्ति के बारे में पढ़ते हैं, जिसे ''परमेश्वर का दूत'' कहकर सम्बोधित किया गया है, जिसने मूसा को एक कटीली झाड़ी के बीच आग की लौ में दर्शन दिया था। यद्यपि स्वर्ग-दूत तो अनेक हैं, परन्तु परमेश्वर का वह दूत उन किसी में से एक नहीं था, क्योंकि चौथी आयत में वहां उसे ''परमेश्वर'' कहकर सम्बोधित किया गया है। वहां छठी आयत में प्रभु ने कहा था, ''मैं तेरे पिता का परमेश्वर, और अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर

और याकूब का परमेश्वर हूं।''

और वहां आठवीं आयत में परमेश्वर ने कहा था, ''इसलिये अब मैं उतर आया हूं कि उन्हें (इस्राएलियों को) मिस्रियों के वश से छुड़ाऊं, और उस देश से निकालकर एक अच्छे-स्थान में पहुंचाऊं।''

हमने 1 कुरिन्थियों 10:1-4 में से भी पढ़कर देखा था कि परमेश्वर के जिस व्यक्तित्व ने वास्तव में इस्राएलियों को मुक्त करवाया था वह 'वचन' था, वही जिसने बाद में एक मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर यीशु मसीह बनकर जन्म लिया था।

निर्गमन 3:13, 14 में हम पढ़ते हैं कि मूसा ने परमेश्वर के दूत से पूछा था, ''... जब मैं इस्राएलियों के पास जाकर उनसे कहूं, तुम्हारे पितरों के परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है, तब यदि वे मुझसे पूछें, 'उसका नाम क्या है?' तब मैं उनको क्या बताऊंगा? परमेश्वर ने मूसा से कहा, ''मैं जो हूं सो हूं।'' फिर उसने कहा, तू इस्राएलियों से यह कहना, 'जिसका नाम मैं हूं, है उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।''

यूहन्ना 8 अध्याय में प्रभु यीशु और यहूदियों के बीच वार्तालाप हो रहा था, तब अंत में यीशु ने उन से यूं कहा था :

''मैं तुम से सच-सच कहता हूं, कि पहले इसके कि अब्राहम उत्पन्न हुआ, मैं हूं।''

ये ऐसे शब्द हैं जिनका इस्तेमाल केवल परमेश्वर के लिये ही हो सकता था, परन्तु यीशु ने इन्हीं शब्दों को अपने ऊपर उपयोग में लाकर यह दर्शाया था कि वही आदि से वर्तमान है। उसने अपना परिचय उसी तरह से 'मैं हूं' कहकर दिया था जिस प्रकार से परमेश्वर ने मूसा को अपना परिचय दिया था। और उसके सुननेवाले समझ गए थे कि उसके कहने का क्या तात्पर्य है। इसीलिये उन्होंने यह समझकर कि वह परमेश्वर की निन्दा कर रहा है उसे मारने के लिये पत्थर उठा लिये थे।

सो 'परमेश्वर का दूत' जिसने मूसा को उस जलती झाड़ी के बीच दर्शन दिया था, वास्तव में और कोई नहीं था किन्तु स्वयं वही प्रभु था जो यीशु के रूप में बाद में पृथ्वी पर आया था प्रभु का वही दूत पुराने नियम में अन्य स्थानों पर भी प्रकट हुआ था, जैसे कि हम निर्गमन 32:34; निर्गमन 14:19, न्यायियों 13:6; 2 शमूएल 14:17, 20; न्यायियों 2:1; यशायाह 63:9 में भी पढ़ते हैं।

निर्गमन 32:34 से लेकर 33 अध्याय तक हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने कहा था कि, ''मेरा दूत'' इस्राएलियों के आगे-आगे चलेगा। सो जब कि निर्गमन 32 और यूहन्ना 8 से हम देखते हैं कि वह 'दूत' परमेश्वरत्व में का एक व्यक्तित्व अर्थात यीशु मसीह था, और जैसे कि 1कुरिन्थियों 10:1-4 में उसी के विषय में लिखा है कि वही मसीह अर्थात् चट्टान था, तो हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि वह भेजनेवाला प्रभु जिसका वर्णन हमें निर्गमन 32 में मिलता है स्वयं पिता परमेश्वर था, और उसका दूत जिसे उसने भेजा था, उसका वही वचन था, जो बाद में यीशु मसीह बनकर प्रकट हुआ था।

न्यायियों 2:1 में प्रभु के उस दूत को यह कहकर वर्णित किया गया है, ''मैंने तुम को मिस्र से ले आकर इस देश में पहुंचाया है।''

न्यायियों 13 अध्याय में हम मानोह के बारे में पढ़ते हैं, कि वह परमेश्वर से प्रार्थना

करके कहता है, कि वह अपने दूत को उसकी पत्नी और उसके पास भेजे। 9वीं आयत में लिखा है:

''तब परमेश्वर का वही दूत उसके पास आया'' यहां भी हम देखते हैं कि परमेश्वर भेजनेवाला था और जिसे भेजा गया था, वह परमेश्वर का दूत था।

यशायाह 63:7-10 में हम प्रभु के बारे में और उसके सम्मुख रहनेवाले दूत के बारे में, जिसने इस्राएल का उद्धार किया था, और उसके पवित्र आत्मा, अर्थात् परमेश्वरत्व में के तीनों व्यक्तित्वों के बारे में एक साथ पढ़ते हैं।

नई वाचा की श्रेष्ठता

जैरी बेट्स

बहुत सी बातें हैं जिनमें नई वाचा पुरानी वाचा से श्रेष्ठ है और हम उन सब बातों पर पूरी चर्चा नहीं कर सकते। इब्रानियों की पुस्तक का लेखक इस विषय पर एक अच्छी चर्चा देता है सो हम उन कुछ अंतरों की बात करेंगे जिसका उसने उल्लेख किया है।

उत्तम याजकाई

पुरानी वाचा में एक याजकाई दी गई थी। जिसमें याजक लोग लोगों की ओर से बलिदान भेंट करते थे। लोगों को सीधे परमेश्वर तक जाने की अनुमति नहीं थी बल्कि उन्हें अपने बलिदान और भेटों को याजक के पास लाना होता था। जो भी उन्हें परमेश्वर के लिये याजक के पास लाना होता था, जो उन्हें परमेश्वर को चढ़ाते थे यह याजक लेवी के गोत्र से होते थे और महायाजक हारून के वंश में से ठहराया जाता था। यह याजक साधारण लोग ही होते थे जिनकी अपनी अपनी कमजोरियां और खोट होते थे। इस से वे पूरी तरह से लोगों के साथ सहानुभूति कर सकते थे क्योंकि वे भी मनुष्य ही थे। जैसा कि हम इब्रानियों 5:2-3 में पढते हैं, ''और वह अज्ञानों, और भूले भटकों के साथ नर्मी से व्यवहार कर सकता है इसलिए कि वह आप भी निर्बलता से घिरा है। और इसीलिए उसे चाहिए, कि जैसे लोगों के लिए, वैसे ही अपने लिए भी पाप-बलि चढ़ाया करे। ''याजक किसी भी अन्य व्यक्ति की तरह ही पापी ही होता था इसलिए उसे पहले अपने लिए भी बलिदान भेंट करना होता था, उसके बाद वह दूसरों के लिए बलिदान भेंट कर सकता था।

लेकिन नई वाचा में हमारे पास बहुत श्रेष्ठ महायाजक है यानी यीशु मसीह। ''सो जब हमारा ऐसा बड़ा महायाजक है, जो स्वर्गों से होकर गया है, अर्थात परमेश्वर का पुत्र यीशु; तो आओ, हम अपने अंगीकार को दृढ़ता से थामें रहे। क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके; बरन् वह सब बातों में हमारी नाईं परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला। इसलिए आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बान्धकर चलें, कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे'' (इब्रानियों 4:14-16) हमारे पास एक ऐसा

महायाजक भी है जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ सहानुभूति कर सकता है क्योंकि वह मनुष्य बना और हमारी ही तरह परखा भी गया। परन्तु वह कभी परीक्षा में नाकाम नहीं हुआ क्योंकि उसने कभी पाप नहीं किया, ''सो ऐसा ही महायाजक हमारे योग्य था, जो पवित्र, और निष्कपट और निर्मल, और पापियों के अलग, और स्वर्ग से भी ऊंचा किया हुआ हो'' (इब्रानियों 7:26)। इस कारण पुरानी याजकाई से नई याजकाई कहीं श्रेष्ठ है।

उत्तम प्रतिज्ञाएं

यह नई वाचा अंदरूनी और आत्मिक है। ''फिर प्रभु कहता है, कि जो वाचा मैं उन दिनों के बाद इस्त्राएल के घराने के साथ बान्धुंगा, वह यह है, कि मैं अपनी व्यवस्था को उनके मनों में डालूंगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूंगा, और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा, और वे मेरे लोग ठहरेंगे'' (इब्रानियों 8:10)। पहली वाचा को पत्थर की पट्टियों पर लिखा गया था परन्तु नई वाचा को हमारे हृदयों पर लिखा गया है। इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर ने हमारे मनों में अपने वचन को सीधे डाल दिया है। परन्तु यह ज्ञान हमें वचन का अध्ययन करने और उसे सीखने से मिलता हैं ''भविष्यद्वक्ताओं के लेखों में यह लिखा है: 'वे सब परमेश्वर की ओर से सिखाए हुए होंगे।' जिस किसी ने पिता से सुना और सीखा है, वह मेरे पास आता है'' (यूहन्ना 6:45)। ध्यान दें कि हमें परमेश्वर के वचन से सुनते और सीखते रहना आवश्यक है, परन्तु अब यह वचन हमारे मनों पर लिखा गया है। पुरानी वाचा में उसके लाभ लेने के लिए शारीरिक रूप में जन्म लेना आवश्यक होता था, उसके बाद उसे परमेश्वर के बारे में बताया जाता था। अब पहले सीखकर मन से परमेश्वर के अधीन हुआ जाता है और तब हम परमेश्वर के राज्य के लोग बनते हैं। परमेश्वर के वचन की बातें जब तक मन पर खुद नहीं आती तब तक यह शक्तिहीन है।

अब हमारा परमेश्वर के साथ और निकट सम्बन्ध है। ''फिर प्रभु कहता है, कि जो वाचा मैं उन दिनों के बाद इस्त्राएल के घराने के साथ बान्धुंगा, वह यह है, कि मैं अपनी व्यवस्था को उनके मनों में डालूंगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूंगा, और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा, और वे मेरे लोग ठहरेंगे'' (इब्रानियों 8:10)। यह शब्द कोई नए नहीं है क्योंकि यह शब्द लैव्यव्यवस्था 26:12 में भी मिलते हैं। फिर भी अब इनका अर्थ अधिक स्पष्ट हो जाता है। पुरानी वाचा असल में परमेश्वर और उसके लोगों के बीच एक बहुत बड़ी दूरी रखती थी। इसे मन्दिर में पर्दे और याजकाई के द्वारा समझाया गया था। अब सब लोग सीधे परमेश्वर तक पहुंच सकते हैं। हर देश के सब मसीही, पुरूष हों या स्त्रियां पुराने नियम के याजकों के समान हैं। ''प्रभु निकट है'' (फिलिप्पियों 4:5)। हम ''परमेश्वर की शान्ति, जो समझ के बिलकुल परे है'' (फिलिप्पियों 4:7)। ''और हर एक अपने देशवाले को और अपने भाई को यह शिक्षा न देगा, कि तू प्रभु को पहिचान क्योंकि छोटे से बड़े तक सब मुझे जान लेंगे'' (इब्रानियों 8:11)। जैसा कि मैंने पहले कहा था पुरानी वाचा ने व्यक्ति पुरानी वाचा में शारीरिक रूप में जन्म लेता था। बाद में उसे वाचा की शर्ते बता दी जाती थीं। औरतों के लिए यह एक व्यक्तिगत समर्पण के बजाय पारिवारिक या राष्ट्रीय रस्म थी। बहुतों ने परमेश्वर की शिक्षाओं को सीखकर भी

दिल से नहीं माना। नई वाचा में हम वाचा में प्रवेश करने से पहले आत्मिक रूप में जन्म लेकर परमेश्वर को जानते हैं (यूहन्ना 3:3, 5)। नई वाचा हर जाति के सब लोगों के लिए भी है क्योंकि पुरानी वाचा केवल इस्त्राएल जाति के साथ बांधी गई थी।

उत्तम बलिदान

''क्योंकि मैं उनके अधर्म के विषय में दयावन्त हूंगा, और उनके पापों को फिर स्मरण न करूंगा'' (इब्रानियों 8:12)। पुरानी वाचा में असली क्षमा नहीं थी। ''क्योंकि अनहोना है, कि बैलों और बकरों का लोहू पापों को दूर करे'' (इब्रानियों 10:4)। पुराने बलिदानों का लहू परमेश्वर के मेमने की ओर ईशारा करते थे ''जो जगत का पाप ले जाता है'' (यूहन्ना 1:29)। पुराने नियम के बलिदान पापों को पूर्ण क्षमा नहीं बल्कि पापों का ''स्मरण'' कराते थे (इब्रानियों 10:3)। पर मसीह में परमेश्वर हमारे पापों को स्मरण नहीं रखता। यीशु ने अपने आपको सिद्ध बलिदान के रूप में दे दिया। ''वैसे ही मसीह भी बहुतों के पापों को उठा लेने के लिए एक बार बलिदान हुआ और जो लोग उस की बाट जोहते है, उसके उद्धार के लिए दूसरी बार बिना पाप के दिखाई देगा'' (इब्रानियों 9:28)। ''उसी इच्छा से हम यीशु मसीह की देह के एक ही बार बलिदान चढ़ाए जाने के द्वारा पवित्र किए गए है'' (इब्रानियों 10:10)। यीशु ने हर युग में सब लोगों के लिए एक ही बलिदान दे दिया। अब पुराने नियम में दिए जाने वाले जानवरों की तरह बार बार बलिदान देने की कोई आवश्यकता नहीं हैं जैसे कि हमने देखा है, पुरानी वाचा पर इस नई वाचा की कई बढ़ते हैं। और भी बहुत सी बातें बताई जा सकती हैं पर यह दिखाने के लिए कि उत्तम वाचा का मध्यस्थ सचमुच में मसीह है इतना ही काफी है। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हम नई वाचा के लोग हैं और चाहे कितना भी प्रलोभन आये हम वाचा के इस सम्बन्ध को कभी न छोड़ें। इस नई वाचा में आने की शर्तें बड़ी आसान हैं। मसीह में विश्वास और उस विश्वास का अंगीकार (रोमियों 10:9-10), साथ में अपने पापों से मन फिराकर अपने पापों की क्षमा के लिए मसीह में बपतिस्मा लेना (प्रेरितो 2:36-39)।

एक मसीही कौन है?

ई. क्लाउड गार्डनर

कोई भी व्यक्ति अपनी समझ से यह नहीं बता सकता कि एक मसीही कौन है। परन्तु बाइबल इस बात को परिभाषित करती है और बताती है कि मसीही कौन है। ''मसीही'' सरसरी तौर पर एक कौम के लिए और किसी भी व्यक्ति के लिए जो यीशु के पीछे चलने का दावा करता हो, इस्तेमाल होने वाला शब्द है।

यह समझना आवश्यक है कि बाइबल के अर्थ में मसीही कौन है। इसी से तय होगा कि हम अन्य धार्मिक समूहों के लोगों यानी प्रोटेस्टेंटों, कैथोलिकों, यहूदियों या मुस्लिमों को नये नियम की मसीहियत को सिखाना चाहते हैं या नहीं। यदि वे सब जो गम्भीर, समर्पित और सच्चे और परमेश्वर को भा रहे हैं, तो हमें परमेश्वर के साथ उनकी स्थिति

की परवाह छोड़ सुसमाचार सुनाने की कोशिश करने की बात भूल जानी चाहिए। इसका अर्थ यह हुआ कि उन्हें लाने के लिए हमारे पास कोई सुसमाचार नहीं होगा। इसके अलावा यदि लोग मसीही हैं। तो हमारी उनके साथ संगति या सहभागिता है। यदि वे वैसे मसीही हैं जैसा कि नया नियम बताता है तो हम उनके साथ आराधना में, कैंपेनों में या धार्मिक कार्यक्रमों में भाग ले सकते हैं। बाइबल कहती है कि सत्य की ''ज्योंति में'' चलने वाले सब लोगों की एक दूसरे के साथ और मसीह के साथ सहभागिता है (1 यूहन्ना 1:7) सब भले, अच्छे लोगों के जो अपने-अपने तरीके से परमेश्वर की सेवा करने की कोशिश कर रहे हैं, भाई होना कितनी अच्छी बात होगी। उन सम्माननीय लोगों से जो आदरणीय और धार्मिक हैं, अलग होना कितना कष्टदायक है।

बाइबल में दी गई एकता की योजना (इफिसियों 4:3-7), मसीह में एक होने का ईश्वरीय ढंग है। अफसोस है कि ऐसे धार्मिक लोग भी हैं जो एक ही देह, एक ही आत्मा, एक ही आशा, एक ही प्रभु, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा और एक ही परमेश्वर की इन सात बुनियादी बातों को नकारने या बिगाड़ने का प्रयास करते हैं। इन सातों में से एक को मान लेने का मतलब सातों को मानना है।

हम मानवीय समझ से यह निर्णय करने का साहस नहीं करते कि एक मसीही कौन है? इसका उत्तर परमेश्वर देता है। उसने उद्धार की योजना बता दी है जिसके द्वारा व्यक्ति मसीही बनता है और यह मसीह की आज्ञा को मानने से होता है। मसीही वह है जिसका यीशु द्वारा अपने प्रेरितों को इल्हाम से दी गई शर्तों को मानने के लिए उसके पास आने के कारण, पिछले पापों से उद्धार हो गया है।

यीशु ने साफ साफ कहा, ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा'' (मरकुस 16:16)। पतरस ने आज्ञा दी, ''मन फिराओ, और तुम में से हम एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे'' (प्रेरितों 2:38)। कई और आयतें बताती हैं कि इन आज्ञाओं को मानना आवश्यक है। यदि एक आज्ञा को टाला या बदला जा सकता है तो दूसरी आज्ञाओं के साथ भी ऐसा हो सकता है। मन फिराना और बपतिस्मा दोनों अनिवार्य हैं।

कई डिनोमिनेशनें बताती हैं कि ''केवल विश्वास'' के द्वारा, ''यीशु को अपना निजी मुक्तिदाता मानकर,'' या ''पापों की क्षमा के लिए प्रार्थना करके'' व्यक्ति मसीही बन जाता है या मसीह में आ जाता है। फिर भी यीशु की बातें तो वैसे की वैसे हैं और इसलिए हमारे लिए यह सिखाना आवश्यक है कि किसी पश्चात्तापी विश्वासी के लिए मसीही बनने के लिए पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेना अनिवार्य है। उनके साथ संगति कैसे हो सकती है, जिन्होंने यीशु की आज्ञा को न माना हो?

मसीही वही है जो आज्ञा मानकर यीशु के पास आया है (प्रेरितों 2:38, 41) और आज्ञा मानने पर उसे कलीसिया में मिला लिया गया है क्योंकि उसे यीशु द्वारा बचाया गया है। ''और जो उद्धार पाते थे उनको प्रतिदिन प्रभु उन [यानी कलीसिया] में मिला लेता था ''(प्रेरितों 2:41)। नये नियम के समयों में उद्धार पाए हए लोगों में से कोई कलीसिया

के बाहर नहीं होता था। मसीही बनने या उद्धार पाने से व्यक्ति कलीसिया का सदस्य बन जाता है न कि किसी डिनोमिनेशन का। क्योंकि कलीसिया के बनने के कई सौ साल बात तक किसी डिनोमिनेशन का कोई अस्तित्व नहीं था। यह शारीरिक जन्म की तरह है। जब किसी बच्चे का जन्म होता है जन्म लेते ही वह परिवार का सदस्य बन जाता है। इसी प्रकार से जब कोई ''नये सिरे से जन्म'' (यूहन्ना 3:5) लेता है तो परमेश्वर के परिवार अर्थात कलीसिया का भाग बन जाता है। जिन्होंने मसीह के सुसमाचार की आज्ञा मान ली है, वे मसीह में भाइयों और बहनों के रूप में आ गए हैं।

मसीही वह है जिसे मसीह का नाम मिला है। वह ''मसीही'' अर्थात मसीह-सा है। मसीह का अनुयायी और शिष्य होने के कारण वह मसीह का आदर उद्धारकर्त्ता, अपनी कलीसिया के बनाने वाले और सिर यानी प्रमुख के रूप में करता है। मनुष्यों के दिए और बाइबल से बाहर के सभी नामों को विभाजनकारी और बाइबल से बाहर का होने के कारण वह नकार देता है। केवल मसीही होने के लिए यही सही तरीका है (1 पतरस 4:11)।

मसीही व्यक्ति का जीवन यीशु के जीवन और शिक्षाओं के साथ मेल खाता है। बेशक वह सिद्ध नहीं है, पर जीवन की अपनी हर बात में वह प्रभु का अनुसरण करने की कोशिश करता है। वह आराधना करने, प्रार्थना करने और बाइबल अध्ययन करने में समर्पित होगा। वह समाज में, परिवार में, कारोबार में और कलीसिया में अच्छा नागरिक होगा (तीतुस. 2:11, 12;मत्ती 7:12)।

मसीही व्यक्ति विश्वासी होगा और एक दिन परमेश्वर के अनुग्रह से यीशु को यह घोषणा करते हुए सुनेगा, ''धन्य, हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास'' (मत्ती 25:21)।

यीशु ने बताया, ''... जो कोई मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चले, वही मेरा भाई और मेरी बहिन और मेरी माता है'' (मत्ती 12:50)। आज हम उन सब लोगों के साथ संगति का आनन्द ले सकते हैं जो ''पिता की इच्छा पर चलते'' हैं (मत्ती 7:21)।

सबसे बड़ी त्रासदी

डेविड फॅर

यदि आप कलीसिया को छोड़ दें और फिर से वहीं पर लौट जाएं जहां से आप आएं थे, तो आपकी स्थिति क्या होगी? दबाव और परीक्षा के विरूद्ध सफाई देने के लिए आपको छोड़ देने के भयंकर परिणामों का पता होना आवश्यक है।

बहुत सी आयतें हैं जो छोड़ जाने वालों के अंत का विवरण देती हैं परन्तु यह दिखाने के लिए कि परमेश्वर को छोड़ देना कितना खतरनाक है, जो यहां दी जा रही है, इतनी ही काफी हैं। कृपया इनमें से हर आयत को ध्यान से पढ़ें।

यूहन्ना 15:4-6. ये यीशु द्वारा इस्तेमाल किए गए उदाहरण में से हैं। जिस प्रकार से डाली के लिए दाखलता से जुड़े रहना आवश्यक है, वैसे ही हर मसीही के लिए मसीह

के साथ जुड़े रहना आवश्यक है। फल लगना इस बात का सबूत है कि ''डाली'' अभी तक ''दाखलता'' में बनी हुई है। आयत 6 में परिणामों पर ध्यान दें।

इब्रानियों 10:26-31. आयत 26 में बताया गया जानबूझकर किया गया पाप मसीह और कलीसिया को छोड़ जाने के जानबूझकर लिए गए निर्णय को बताता है। जब कोई ऐसा करता है तो इसमें पापों के लिए एकमात्र बलिदान को छोड़ दिया है और अब उसे उद्धार पाने की कोई आशा नहीं हो सकती (जब तक वह मन न फिराए) आयतें 28-31 बताती हैं कि बिना दया के मार डाले जाने से अनन्तकाल के लिए नाश होना अधिक खराब (''भयानक दण्ड'') है।

2 पतरस 2:20-22, साफ बात यह है कि कोई भी जो पहले मसीही था, जब मसीह को छोड़ देता है, तो वह मसीह की कलीसिया को, और सच्चाई को छोड़ देता है, उसने अपने आपको किसी अन्यजाति से जो प्रभु को नहीं जानता है, बुरी स्थिति में डाल दिया है। आयत 22 में कुत्ते और सूअर का उदाहरण पाप में वापस चले जाने के भद्देपन पर जोर देता है।

किसी भाई से एक बार पूछा गया, ''यदि आप कभी मसीह की कलीसिया को छोड़ देते हैं तो आप कहां जाओगे?'' उसका उत्तर था, ''नरक में!'' बाइबल या तो सही है या फिर गलत। परमेश्वर झूठ नहीं बोलता। बिना अपवाद, मसीह की कलीसिया में विश्वास होने की अनिवार्यता, सच्चाई के प्रति वफादारी की और मन और शुद्धता की बात बिल्कुल सही है। बहाने और अपनी बात को साबित करने के तर्क इसे बदल नहीं सकते हैं। परमेश्वर की इच्छा बदलती नहीं है। जब लोग परमेश्वर से मुंह फेर लेते हैं तो उन्हें भयंकर परिणामों का सामना करना पड़ता है।

जब कलीसिया का कोई सदस्य जानबूझकर पाप में लौटता और विश्वासी नहीं रहता है, तो कलीसिया के बाकी लोगों को उससे संगति तोड़ लेना आवश्यक है। 2 थिस्सलुनीकियों 3:6, 14, 15 में इससे जुड़े पौलुस के निर्देशों पर ध्यान दें। 1 कुरिन्थियों 5:1-13 भी पढ़ें जहां वह विशेषकर ऐसे भाई की बात करता है जिसका जीवन व्यभिचार में बीत रहा है।

जब कोई व्यक्ति परमेश्वर के लोगों की संगति में नहीं रह सकता तो उसकी परमेश्वर के साथ कोई संगति नहीं रहती। ऐसे व्यक्ति को तब तक कोई उम्मीद नहीं है जब तक वह मन फिराकर सही रास्ते पर वापस नहीं आ जाता। छोड़ जाने की स्थिति में मर जाने का अर्थ है सदा के लिए नाश होना।

आप यह सोच रहे हो सकते हैं कि आप मसीह और उसकी कलीसिया से कभी मुंह नहीं फेर सकते। आपकी प्रार्थना और उद्देश्य यही होना चाहिए। परन्तु याद रखें कि 1 कुरिन्थियों 10:12 कहता है, ''इसलिये जो समझता है कि मैं स्थिर हूं, वह चौकस रहे; कि कहीं गिर न पड़े।'' याद रखें कि ऐसी सम्भावना हमेशा रहती है। इसलिए परीक्षाओं, निराशाओं और किसी भी ऐसी बात के प्रति चौकस रहें जो आपके प्रेम और विश्वास को कमजोर कर सकते हैं। यदि पीछे मुड़ने की जरा सी भी परीक्षा हो तो तुरन्त इसकी पकड़ में आ जाएं। जब आप परमेश्वर के साथ बातें कर रहे होंगे तो शैतान आपके साथ ''बातें'' नहीं करेगा।

साफ़ साफ़ लिख दें

डैन जैंकिस

हबक्कूक से कहे परमेश्वर के शब्द कि ''दर्शन की बातें लिख वे वरन पटियाओं पर साफ साफ लिख दे'' (हबक्कूक 2:2)। परमेश्वर के राज्य में काम करने वाले हर व्यक्ति का रवैया होने चाहिए। उसकी सेवा में किया गया बहुत कम काम है जो साफ साफ नहीं होता।

प्रचारकों के लिए साफ साफ कहना आवश्यक है। अग्रिप्पा, फेलिक्स और अपने सब सुनने वालों को पौलुस के संदेश की स्पष्टता को आज सिखाए जाने वाले सबकों में इस गुण की कमी से मिलाएं। हमारे पुलपिटों से किया जाने वाला हर हफ्ते का प्रचार आराधनालयों और ''मसीही'' सभाओं में जो मसीह में विश्वास नहीं करते उतना ही स्वीकार्य होगा।

क्या आपने कभी उस पर अचम्भा किया है कि आरम्भिक मसीहियों के प्रचार से शांत नगर कैसे उलट पुलट गए थे, असंतोष बढ़ जाता था और प्रचारकों को आमतौर पर गिरफ्तार कर लिया जाता था परन्तु आज बहुत से लोगों के प्रचार से उन्हें शहर के लोग भी नहीं जानते हैं। ऐसा कैसे हो गया कि पहली सदी के प्रचार में सुनने वालों के दिलों को चीर दिया और उन्हें पहले किए जाने वाले विश्वास को छोड़ने पर मजबूर कर दिया, जबकि आज किए जाने वाले अधिकतर प्रचार से सुनने वाले पर छोड़ दिया जाता है, जिसे यह कभी पता भी नहीं चलता कि उसके जीवन में बदलाव आवश्यक था। परसनल वर्कर्रों के लिए साफ़-साफ़ कहना आवश्यक है। जब हम दूसरो के साथ अध्ययन करते हैं तो उन्हें यह समझ आना आवश्यक है कि हम पाप में हैं। उन्हें अपने पुराने विश्वास को छोड़कर प्रभु के पास आने की आवश्कता को समझना चाहिए। बेशक उन्हें समझना चाहिए कि संगति में आना, चंदा देना, अपने विश्वास को बताना और नैतिकता का पता होना चाहिए। हिसाब लगाने का उनके पास और कोई तरीका नहीं है। जो परसनल वर्कर यह साफ नहीं बता पाते हैं वे पापी के लिए निर्णय लेना कठिन बना देते हैं।

साफ-साफ लिखो! वचन में से बात करते हुए, सरमन में, बाइबल क्लास में और घर में अध्ययन करते समय लक्ष्य होना चाहिए। हमारा लक्ष्य सच को बताना है इसे छुपाना नहीं।

मैं इसे रोक नहीं सकता!

क्रेग फिलिप्स

''उपद्रव और उत्पात हुआ, हाँ उत्पात! क्योंकि यहोवा का वचन दिन भर मेरे लिये निन्दा और ठट्ठा का कारण होता रहता है। यदि मैं कहूँ, 'मैं उसकी चर्चा न करूँगा न उसके नाम से बोलूँगा,' तो मेरे हृदय की ऐसी दशा होगी मानो मेरी हड्डियों में धधकती हुई आग

हो, और मैं अपने को रोकते रोकते थक गया पर मुझ से रहा नहीं जाता'' (यिर्मयाह 20:8, 9)।

क्योंकि प्रेम में चेतावनी की उम्मीद होती है।

एक आदमी जल रही बिल्डिंग में फंस गया । उसकी आंखें दुख रही हैं, गर्मी और धुएं से उसका दम घुट रहा है। वह कभी इधर ढूंढ़ता है और कभी उधर और फिर अंत में उसे बाहर निकलने का रास्ता मिल ही जाता है। ओह, खुली हवा में सांस लेने पर कितना अच्छा लग रहा है! परमेश्वर का धन्यवाद हो! पर फिर उसे जलती हुई बिल्डिंग के अंदर से दूसरों की चीखें सुनाई देती हैं। वह मन ही मन सोचता है, ''मुझे मालूम है कि बाहर किस तरफ से जाना है। पर उन्हें अभी पता नहीं है। मुझे उनकी सहायता करनी होगी नहीं तो वे जलकर मर जाएंगे।'' सो आग की लपटों और धुएं में उन्हें बचाने के लिए पीछे की ओर मुड़ जाता है जो अपने आपको बचा नहीं सकते थे।

बाइबल बताती है, ''और जैसे मनुष्यों के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है'' (इब्रानियों 9:27)। ''सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं'' (रोमियों 3:23)। ''जब कि प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा, और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा'' (2 थिस्सलुनीकियो 1:7, 8)।

''फिर जिस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया, वे उसका नाम कैसे लें? और जिसके विषय सुना नहीं उस पर कैसे विश्वास करें? और प्रचारक बिना कैसे सुनें? (रोमियों 10:14)।

यदि आपके घर में आग लगी हुई हो और आपका परिवार या आपके मित्रों को खतरे अहसास न हो तो क्या आप उन्हें वहां पड़े रहकर मरने देंगे? नहीं! आप उन्हें जगाकर उन्हें बाहर लाने की कोशिश करेंगे और मौत की ऐसी जगह से अपने प्रियजनों को निकालने के लिए आप से जो बन पड़े, करेंगे।

मैं इसे रोक नहीं सकता! क्यों?

क्योंकि जिम्मेदारी में उम्मीद होती है कि हम बात करें।

जैसे परमेश्वर ने यहेजकेल से कहा था, वैसे ही वह हम से कहता है, ''सो चाहे वे सुने; तौभी तू मेरे वचन उन से कहना, वे तो बड़े बलवई हैं'' (यहेजकेल 2:7)।

''हे मनुष्य के सन्तान मैं ने तुझे इस्राएल के घराने के लिये पहरूआ नियुक्त किया है; तू मेरे मुंह की बात सुनकर, उन्हें मेरी ओर से चिताना। जब मैं दुष्ट से कहूं कि तू निश्चय मरेगा, और यदि तू उसको न चिताए, और न दुष्ट से ऐसी बात कहे जिससे कि वह सचेत हो और अपना दुष्ट मार्ग छोड़कर जीवित रहे, तो वह दुष्ट अपने अधर्म में फंसा हुआ मरेगा, परन्तु उसके खून का लेखा मैं तुझी से लूंगा'' (यहेजकेल 3:17, 18)।

मेरे ऊपर पाप में खोए हुए लोगों की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है क्योंकि यीशु जिसने हमारे लिए दुख सहा, हमारे लिए लहू बहाया, हमारे उद्धार के लिए परेशान हुआ, हमें जाकर दूसरों को बताने की आज्ञा दी है कि वे अपने पापों से कैसे बच सकते हैं।

कोई कहता है, ''मुझ में यह खूबी नहीं है ...'', ''मैं बहुत व्यस्त हूं ...'', ''मुझे

और बहुत काम है ...।''

एक सेनापति के युद्ध के मैदान से, घायल और थके हुए छावनी में वापस आने की कहानी बताई जाती है। अपने टैंट के पास उसने जो देखा कि कोई तगड़ा आदमी खड़ा है। उसने पुकारकर कहा, ''हे सिपाही, तुम वहां क्या कर रहे हो?''

जवाब मिला, ''साहब मैं कप्तान के जूते चमका रहा हूं।'' सेनापति ने पूछा, ''कप्तान के जूते चमका रहे हो?''

जी सर।

मैं यह सुनिश्चित कर रहा हूं कि उनके आने पर सब कुछ साफ सुथरा और अच्छा हो।''

सेनापति ने जोर देते हुए कहा, ''सिपाही तुम्हारी जरूरत जंग के मैदान में है।''

''पर, साहब मुझ में यह योग्यता नहीं। मुझे युद्ध से डर लगता है।''

''सिपाही, मेरा एक और सवाल है। क्या तुम्हारे पास दो टांगे हैं?''

''जी साहब''

''तुम्हारी बाहों या तुम्हारे कानों या तुम्हारी आंखों या फिर तुम्हारे दिमाग में कोई खराबी है?''

''नहीं, साहब।''

सेनापति ने अपने सहायक की ओर मुड़ते हुए कहा, ''ध्यान रखो कि यह आदमी मर जाना चाहिए।'' सिपाही हैरान होकर देखने लगा और विरोध जताने लगा, ''सेनापति, आप कठोर आदमी हैं।''

यीशु ने अपने लोगों के लिए बहुत दुख उठाया है और उसने हम में से हर किसी के उस गुण को इस्तेमाल करने को कहा है जो उसने हमें दिया है कि हम पाप में खोए हुए लोगों के पास जाएं। तोड़ो के दृष्टांन्त में, जब भयभीत सेवक ने अपने तोड़े को इस्तेमाल करने के बजाय ज़मीन में गाड़ दिया तो उसने अपने स्वामी से विरोध करते हुए कहा था, ''हे स्वामी, मैं तुझे जानता था कि तु कठोर मनुष्य है: इसलिये मैं डर गया और जाकर तेरा तोड़ा मिट्टी में छिपा दिया। देख, जो तेरा है, वह यह है।''

यीशु का उत्तर सेनापति के उत्तर से बहुत अलग नहीं था। उसने कहा, ''हे दुष्ट और आलसी दास ...।'' फिर उसने अपने स्वर्गदूतों को आदेश दिया, ''इस निकम्मे दास को बाहर के अन्धेरे में डाल दो, जहां रोना और दांत पीसना होगा'' (मत्ती 25:24-26, 30)।

इस दृष्टांत से पता चलता है कि यीशु हमारा मुक्तिदाता ही नहीं बल्कि ''कठोर आदमी'' भी है। उसने हमें करने के लिए एक काम दिया है और वह हम से इसे पूरा करने की उम्मीद करता है।

कोई कहता है, ''अरे यह तो बहुत कठिन है। लोग सुनना ही नहीं चाहते हैं।''

अपनी गैर जिम्मेदारी पर यीशु को मत रूलाओ। लोग विद्रोही हैं। बहुत बार हम उनके पास जाते हैं पर कोई सुनना नहीं चाहता है। हमें बार-बार जाना होगा। हमें बेपरवाही का सामना करना पड़ेगा। हमें उनका ध्यान खींचना पड़ेगा। परन्तु हम शैतान को हमें निराश नहीं करने देंगे कि हम कोशिश करना ही छोड़ दें।

नया-नया मसीही होने पर सुसमाचार को दूसरों को सुनाने के लिए मैंने एक आदमी से दोस्ती की जिसकी पृष्ठभूमि संसार में बहुत कुछ मेरे जैसे ही थी। सुसमाचार मेरे लिए बहुतमूल्य था और मैं अपने मित्र को उस अद्‌भुत शांति और आशा को बताना चाहता था जो मुझे मिली थी।

मैं अपने मित्र के घर में जाता और उससे बात करने की कोशिश करता, जबकि वह इसमें कोई दिलचस्पी नहीं दिखाता था। मैं सुसमाचार के लिए उसकी आवश्यकता को भूल नहीं सकता था, जिस कारण मैं उससे मिलने के लिए फोन करके जाता रहा। एक दिन मैं उसके घर के सामने खड़ा था, तो मुझे खिड़की के बीच में एक और मित्र दिखाई दिया। उसने मुड़कर कुछ कहा ओर मेरा मित्र बाहर देखने के लिए खिड़की में से बाहर आया। जब उसने मेरी गाड़ी देखी तो उसने गुस्से और खीज से मेरी तरफ मुक्का दिखाया। उसका यह तरीका मेरे दिल को चीरने वाला लगा, क्योंकि उसके साथ सच्चाई साझा करने के लिए मेरे प्रयासों के प्रति उसकी घृणा साफ-साफ पता चल गई थी।

मैंने गाड़ी स्टार्ट की और वहां से निकल गया, अब मेरे आंसु रूक नहीं रहे थे।

मैं वापस आया, उससे बातें करता रहा, उसको समझाता रहा कि वह अपने जीने के ढंग से अपने जीवन और प्राण को बेकार कर रहा है और परमेश्वर उससे प्रेम करता है और चाहता है कि उसे बदलने में मैं उसकी सहायता करुं।

आज वह मित्र सुसमाचार का प्रचारक है। उसने न्यू इंग्लेंड स्टेट में मिशन कार्य पूरा किया है और वर्तमान में दूसरों तक पहुंचने के लिए अपने आपको बेहतर ढंग से तैयार करने के लिए ट्रेंनिग स्कूल में पढ़ाई कर रहा है। यह सोचकर मेरा मन ठण्डा हो जाता है कि यदि मैं वापस न जाता तो क्या होता। यदि उसके गुस्से को देखकर मैं चला जाता तो क्या होता।

उन आत्माओं की खातिर जिनसे हम प्रेम करते हैं, हम किसी भी प्रकार के अपमान और निराश करने वाले व्यवहार को सहन कर सकते हैं।

यीशु सुसमाचार सुनाने के काम को अक्सर किसान से मिलाया करता था। वह बीज बोता हैं। उसके हाथों में छाले पड़ जाते हैं सूरज की धूप में उसका बदन जलता है। आंधी से उसकी आंखों में मिट्टी धंस जाती है। कीड़े उसे डंसते और काट लेते हैं। उसका बीज अक्सर पक्षी चुग लेते हैं और कई बार तो पानी भी बहा ले जाता है पर वह बोना और पानी देना नहीं छोड़ता, क्योंकि वह जानता है कि फसल तभी काटेगा यदि वह ईमानदारी से काम करेगा।

हमें वैसे ही परमेश्वर के वचन का प्रचार करते रहना आवश्यक है। भजन संहिता 126:5 कहता है, ''और चार कोढ़ी फाटक के बाहर थे; वे आपस में कहने लगे, हम क्यों यहां बैठे बैठे मर जाएं?''

मैं इसे रख नहीं सकता! क्यों?

क्योंकि शुभ समाचार बांटे जाने के योग्य है।

2 राजाओं 6 में इस्त्राएल के बड़े नगर सामरिया की अरामी सेना द्वारा घेराबंदी किए जाने की बात पढ़ने को मिलती हैं नगर में बड़ा अकाल पड़ा हुआ था और लोग भूख से

इतना परेशान थे कि दो माताएं अपने अपने बेटों को बारी-बारी से उबालकर खाने के लिए सहमत हो गई। अध्याय 4 में चार कोड़ी खाने के लिए भीख मांगने, नगर में जाने या अरामी छवनी में जाने की बहस कर रहे थे। वे जानते थे कि सामरिया में खाना नहीं है इसलिए उन्होंने अरामियों के आगे स्मपर्ण करके अपना भाग्य अजमाने का निर्णय किया। जब वे सेना की छावनी में पहुंचे तो उसे खाली देखकर दंग रह गए! रात को परमेश्वर ने अरामियों को घोड़ों और रथों की सेना का शोर सुनाया था जिससे डरकर वे भाग गए थे और अब उनकी छावनी खाली पड़ी थी।

छावनी को खाली पाकर कोढ़ी लूट का माल लेकर छुपाने लगे। फिर उनमें से एक ने कहा, ''जो हम कर रहे हैं वह अच्छा काम नहीं है, यह आनन्द के समाचार का दिन है, परन्तु हम किसी को नहीं बताते। जो हम पौ फटने तक ठहरे रहें तो हम को दण्ड मिलेगा; इसलिए अब आओ हम राजा के घराने के पास जाकर यह बात बतला दें'' (2 राजाओं 7:3-9)।

परमेश्वर का उद्धार खुशी की खबर है। जो इतनी अच्छी है कि हम इसे अपने पास नहीं रख सकते, कहीं ऐसा न हो कि कोई दण्ड हम पर आन पड़े। यह सच है कि कुछ लोग इसे सुनना पसंद नहीं करते, पर हमारी बातें उनके लिए जो जानते हैं कि वे भूख से मर रहे हैं, जीवन की रोटी ही होंगे।

फिर भी सिखाने का सबसे बढ़िया तरीका निजी बाइबल अध्ययन है, और सबसे बढ़िया जगह घर है। आपके घर में या आपके मित्र के घर में या रिश्तेदारों के घर में जो आपको उनके पास आकर उन सच्चाइयों को जो आपके लिए कीमती हैं साझा करने की अनुमति दें। खुशी की खबर बांटे जाने के लिए है।

मेल-मिलाप की सेवा

डॉ. एफ.आर.साहू (छ.ग.)

आईये हम इस छोटे से पाठ में ''मेल मिलाप की सेवा'' के विषय में जाने मेल मिलाप की सेवा क्या है? मेल मिलाप की सेवा का मतलब क्या है? मेमिलाप की सेवा हम कैसे कर सकते हैं? इन तमाम बतों को जानेगें। और जैसे कि पवित्र शास्त्र का वचन हमें बताता है कि ''मिलाप करानेवाले धार्मिकता का फल मेल मिलाप के साथ बोतें हैं। (याकूब 3:18)। यहां याकूब के कहने का मतलब यह है कि जो वास्तपव में समझदार और ज्ञानवान होते हैं, वे धार्मिकता का फल मेल-मिलाप के साथ बोतें हैं।

मेल-मिलाप का मतलब है कि एक पापी को पुन: परमेश्वर के पास लाना या परमेश्वर की संगती में वापस लाना। और इस मेल-मिलाप की सेवा कार्य को सबसे पहले यीशु ने किया। क्योंकि मेल-मिलाप की सेवा कार्य को संसार के लोग नहीं कर सकते थे।

मेल-मिलाप का जीवन जिसे यीशु ने चुना था उसे संसार का कोई भी धार्मिक

व्यक्ति नहीं कर सकता था। लेकिन मेल-मिलाप की सेवा कार्य को अब कलीसिया का करना है। यह कार्य प्रत्येक मसीही को करना होगा।

इस बात को स्पष्ट करते हुए पौलुस प्रेरित ने लिखा है- ''परमेश्वर का राज्य खाना-पीना नहीं, परन्तु धर्म ओर मेल-मिलाप और वह आनन्द है जो पवित्र आत्मा से होता है जो कोई इस रीति मसीह की सेवा करता है वह परमेश्वर को भाता है और मनुष्यों में ग्रहण योग्य ठहरता है, इसलिए हम उन बातों में लगे रहें जिनसे मेल-मिलाप और एक-दूसरे का सुधार हो।'' (रोमियों 14:17-19)।

लूका-10:38-41 तक का विवरण मेल-मिलाप की सेवाभाव को प्रदर्शित करते हुए वहॉ हमारे लिये पर्दा हटाया जाता है।

अर्थात यहां मार्था और मरियम नामक दो बहिनों के बीच यीशु उपस्थित होता है, वहां मार्था यीशु के लिये अच्छा से अच्छा भोजन बनाने में लीन हो जाती है। परन्तु मरियम यीशु की बातों को ध्यान से सुनने में लवलीन हो जाती है।

यीशु ने मार्था के सेवाभाव के विपरीत मरियम के उपजाऊ भूमि रूपी हृदय को महत्व दिया। क्योंकि मरियम ने मेल-मिलाप के इस भाव को अच्छी तरह से समझा और यीशु ने कहा यह उत्तम भाग जो मरियम ने चुन लिया है जो उससे छिना न जाएगा। (लूका 10:41)

यहां हमें यही शिक्षा मिलती है जिस तरह से यीशु ने मेल-मिलाप की इस सेवा भाव को निस्वार्थ करके दिखाया उसने न तो उनसे आदर और न सम्मान चाहा। और मरियम ने भी अपना पूरा ध्यान प्रभु के वचनों को सुनने में लगा दिया।

आज बहुत सर मसीही प्रचारक ऐसे भी हैं, जो सुसमाचार सुनाने के बहाने अपने निजी स्वार्थ को पूरा करने की अपेक्षा रखते हैं। जैसेयह उनका अपना स्वार्थ यानि है अच्छा से अच्छा खाना-पीना और आदर ही उनको अच्छा लगता है।

जैसे पुराने नियम में बहुत सारे शास्त्री फरीसी और सददूकी होते थे तो लोगों से अपनी बड़ाई। और प्रशंसा चाहते थे (मत्ती 23:2-7)।

वैसे ही बहुत से मसीही भाई/बहन भी मार्था की तरह प्रचारकों की सेवा करने की भावना तो रखतें हैं पर परमेश्वर के वचनों को ध्यान पूर्वक सुनने और समझने में लगभग नाकाम रहतें हैं।

मेल-मिलाप की सेवा के लिये दीनता और नम्रता को घारण करना और अपने आप का इंकार करना अत्यंत आवश्यक होती है। अर्थात अपनी व्यक्तिगत कुछ अभिलाषाओं को हमें मार देना चाहिए।

क्योंकि मसीह की दीनता और आज्ञाकारिता के अनुकरण द्वारा ही हम आत्मिक फलों से भरपूर होकर हम लोगों में परमेश्वर के प्रेम को प्रगट सकतें हैं। हमें स्वार्थी नहीं होना चाहिए।

क्योंकि अपने अच्छे चाल-चलन को प्रगट करने के द्वारा ही हम लोगों के लिये आशीष का कारण बन सकते हैं।

यीशु के आगमन का उद्देश्य जिसे हम लूका 19:10 में पढ़कर देखते हैं कि वह किस प्रकार से मेल-मिलाप की सेवा को अपने जीवन में महत्व देता था। बड़े खोए हुओं को ढूंढने और उनका उद्धार करने आया था।

पृथ्वी पर उसके अपनी सेवा काल के दौरान वह पापीयों का मित्र बन गया था और सब चूंगी लेने वाले और पापी पास आया करते थे। क्योंकि उसने कहा था कि वह भले और चगों के लिये नहीं परन्तु रोगियों के लिये आया है।

यीशु ने उनसे प्रेम किया और उन पर तरस आया और उसने इसी प्रकार मेल-मिलाप की सेवाकार्य को बढ़ाया। पापी, रोगी, दुखी लोग उसके पास आते और उसकी सुनते थे और उस पर विश्वास करते थे। क्योंकि वह उनसे प्रेम करता था।

एक मसीही व्यक्ति की बुलाहट भी इसीलिए होती है कि उसके द्वारा दूसरों का सुधार हों। क्या हम और आप ऐसे पापीयों से प्रेम रख सकतें हैं और उन्हें मेल-मिलाप की सेवा दे सकते हैं, ? हम उनका यीशु से मेल करा सकतें हैं।

हम ऐसे लोगों को मसीह का सुसमाचार सुना सकतें हैं, या उन्हें परमेश्वर की संगती में ला सकतें है। जी हां मेरे प्रिय भाई बहनों बहुतेरे लोग पाप करने के कारण परमेश्वर से खोए हुए है परमेश्वर से अलग हो गए है। (रोमियों 3:23), यीशु ऐसी लोगों के लिये आया था। और यह तभी संभव हो सकता है, जब हम उन्हे प्रभु यीशु के पास लेकर आएगें। क्योंकि प्रभु यीशु मसीह के पास आने वालों का निश्चित रूप से परमेश्वर से मेल हो जायेगा।

क्योंकि यीशु ही एक मात्र माध्यम है जिसके द्वारा हम सबका परमेश्वर से मेल संभव होता है। और जैसे यीशु ने कहा-''मार्ग और सत्य और जीवन मैं हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।'' (यूहन्ना 14:6)।

रोमियों 12:18 के अनुसार हमारे लिए विशेष चेतावनी है कि जहां तक हो सके तो हमें सब लोगों के साथ मेल-मिलाप रखना चाहिये।

मेल-मिलाप की सेवा को अपने जीवन में पूरा करने के लिये हमें प्रत्येक दिन सच्चाई और ईमानदारी से परमेश्वर के साथ साथ चलना है। विशेष कर नए जन्में विश्वासीयों के साथ जब वह अपने पापों को मान कर प्रभु को अंगीकार करते है, उनके साथ मां की तरह व्यवहार करना चाहिए विशेष कर हम मसीही प्रचारको को सुसमाचार के अनुसार ही व्यवहार करना चाहिए जिससे की देखने वाले अन्दर प्रभु यीशु मसीह को देख सके। क्योंकि मेल-मिलाप की सेवा कहकर नहीं, परन्तु करके दिखाने की है। यदि आप यीशु के पास आना चाहते है तो उसमें विश्वास कीजिये, अपने पापों से मन फिराकर बपतिस्मा लीजिये, आपको यीशु अपनी कलीसिया में मिलाएगा। (मरकुस 16:16, प्रेरितो 2:38, गलतियो 3:27)।